प्राक्कल्पना के प्रकार :— सा० तथ्यों, घटनाओं एवं समस्याओं की प्रकृति, अनुसन्धान के उद्देश्य एवं तथ्यों के प्रकार के आधार पर प्राक्कल्पनाएं भी कई प्रकार की हो सकती हैं।

- गुडे तथा हाट → ① अनुभवात्मक ~~समा~~ समानताओं से सम्बन्धित → प्राक्क० मानव के सामान्य ज्ञान, तर्क वाक्य, दैनिक जीवन के अनुभवों, मान्यताओं, लोकोक्तियों, कहावतों, वक्तव्यों, वार्ताओं तथा विश्वासों पर आधारित होती है।

② जटिल आदर्श-प्ररूपों से सम्बन्धित → इस प्रकार की प्राक्क० में प्रायः एक सामान्य तथ्य अथवा निष्कर्ष को पूर्वाधार मानकर अन्य तथ्यों की तर्कपूर्ण रूप से परीक्षा की जाती है, ऐसी प्राक्क० अल्पसंख्यक समूहों तथा पारिस्थितिकी दशाओं से सम्बन्धित होती है - आत्महत्या

③ विश्लेषणात्मक चरों से सम्बन्धित → कोई भी सा० घटना अनेक कारकों का परिणाम होती है फिर भी इनमें एक कारक प्रमुख तथा अन्य सहायक कारक होते हैं जैसे- बाल अपराध के लिए मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तकार मानसिक विकृति और दुर्बलता को, तो वंशानुक्रमणवादी बुरे वंशानुक्रम को उत्तरदायी मानते हैं। इस प्रकार की प्राक्क० को कारणात्मक प्रा० भी कहते हैं इनमें यह ज्ञात किया जाता है कि यदि किसी एक चर (कारक) में परिवर्तन होता है तो वह किस सीमा तक इसरे चर को प्रभावित करता है।

⇒ कुछ अन्य प्रकार :— (i) सकारात्मक कथनों से सम्बन्धित →

(ii) नकारात्मक कथनों से सम्बन्धित →

(iii) शून्य कथनों से सम्बन्धित →

(iv) कामचलाऊ प्राक्कल्पना →

⇒ प्राक्कल्पना की सीमाएं :–

(i) प्राक्कल्पना में अटूट विश्वास → इसी को सिद्ध करने की कोशिश

(ii) प्राक्कल्पना आधारित लक्ष्य → वास्तविक तथ्यों का संकलन का प्रा. में संशोधन

(iii) विशिष्ट अभिरुचियों तथा संवेगों का प्रभाव →

(iv) अध्ययनकर्ता का प्रतिष्ठा बिन्दु →

⇒ प्राक्कल्पना निर्माण में प्रमुख कठिनाइयां :–

(1) सैद्धान्तिक ढांचे से सम्बन्धित –

(A) स्पष्ट ढाँचे की अनुपस्थिति → विषय से सम्बन्धित सिद्धान्तों का ज्ञान न होने के कारण उपयुक्त प्रा० का निर्माण करने में असमर्थ

(B) ढाँचे के तार्किक एवं कुशल प्रयोग का अभाव →

(2) अध्ययन प्रणालियों से सम्बन्धित → प्रणालियों में वृद्धि जानकारी का अभाव कम्प्यूटर का प्रयोग

(A) घटना की परिवर्तनशीलता →

(B) अध्ययनकर्ता का पक्षपात →

(C) सजातिवाद या समूह केन्द्रितता → पी. वी. यंग ने प्राक्कल्पना के निर्माण के समय अध्ययनकर्ता को तीन बातों का ध्यान रखने का सुझाव दिया है –

(क) अनुसन्धानकर्ता की तीक्ष्ण दृष्टि

(ख) नियन्त्रित कल्पना शक्ति तथा रचनात्मक चिन्तन

(ग) सैद्धान्तिक ढांचे की उपलब्धता तथा उसका ज्ञान।